श्री राधासर्वेश्वरो विजयते

श्री निम्बार्कमहामुनीन्द्राय नमः

पूज्य श्री करुण दास जी महाराज प्रणीत

अष्टयाम

सुख–सार

अनन्त श्री विभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य पीठाधीश्वर
श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य जी महाराज (श्रीजी महाराज)

पूज्य स्वामी श्री करुण दास जी महाराज

परम कृपालवे श्रीसद्गुरु भगवते नमो नमः

श्री राधासर्वेश्वरो विजयते | श्री निम्बार्कमहामुनीनद्राय नमः

परम पूज्य गुरुदेव स्वामी श्री करुण दास जी
प्रणीत

अष्टयाम
सुख-सार

संपादक - **किशोरी शरण**

प्रकाशक –
राधा कृष्ण परिवार सेवा ट्रस्ट
भक्ति धाम कालोनी, आन्यौर परिक्रमा मार्ग
गोवर्धन, मथुरा – 281502
(उत्तर प्रदेश)

प्रकाशन तिथि –
12 जुलाई 2014
(गुरु पूर्णिमा)

प्रतियाँ – 2000

मुद्रक –
प्रमोद प्रिन्टर्स
मसानी तिराहा,
वृन्दावन रोड, मथुरा
(उत्तर प्रदेश)

समर्पण

हे करुणामयी! दिव्य प्रेम की घनीभूत मूर्ति! हे मेरी स्वामिनी श्रीराधे! आप अनादि काल से माया जगत् के उस पार रसमय धाम श्रीवृन्दावन में निज अंग स्वरूपा अपनी सखियों सहित प्राणवल्लभ मनमोहन के साथ नित्य ही रास रसोत्सव मना रही हैं और यह रस केलि विलास लीला अनन्त काल तक चलती ही रहेगी। किसी भी प्रकार का प्रलय माया काल से अति परे इस भाव राज्य का स्पर्श नहीं कर सकता। इस नित्य बिहार का आदि अन्त नहीं है। इस अखण्ड बिहार रूपी सिन्धु के कुछ बिन्दु उछल कर आपकी कृपा से मानस पटल पर गिर पड़े। इससे मन में कुछ-कुछ आर्द्रता आ गयी। इससे भाव शून्य शुष्क हृदय में कुछ-कुछ रस का संचार होने लगा है। आपकी कृपा व प्रेरणा से यही रस स्याही बनकर कुछ अंश में कुछ पन्नों पर अंकित हो गया। हृदय में जो कुछ भाव लहरियाँ उठी, आपने ही श्री किशोरी शरण जी द्वारा प्रेरित करके मुझसे उन भाव तरंगों को लिखवाया। इसके निमित्त और उपादान कारण आप ही हो।

इस रचना में दोष तो भरे होंगे ही क्योंकि मैं दोषागार जो ठहरा। मेरे शब्दकोष में ऐसे अलंकारिक शब्द ही कहाँ हैं जिससे मैं कविता का श्रृंगार कर पाता। मैं नये-नये शब्द लाता भी कहाँ से? काव्य कला का, कविता का ज्ञान तो मुझमें रंच मात्र भी नहीं है। रस अलंकारों से मैं सर्वथा अनभिज्ञ हूँ। फिर भी मुझे परम संतोष है क्योंकि इस रचना में आपका गुणगान हुआ है। आपके परम पावन नामों का गान हुआ है। यह तुकबंदी की है केवल आपको सुनाने व रिझाने के लिये।

हे मेरी स्वामिनी! उर प्रेरिका! यह निकुञ्ज रस समस्त सुखों का सार है। शायद इसलिये ही इस रचना का नाम सुख-सार रखने की प्रेरणा मेरे मन में आपने ही की होगी। सुख-सार नामक यह प्रेम तरंग आपके श्रीचरण कमलों में सादर समर्पित है। इसे स्वीकार करना या न करना आपकी इच्छा है। स्वीकार करने पर भी इसको नष्ट करना, सीमित रखना या असीमित करना यह आपकी इच्छा पर ही पूर्णरूपेण निर्भर है। आपकी यह वस्तु आपके अर्पण है।

दासानुदास
करुणा दास

भूमिका

उपास्य श्रीश्यामा श्याम के रस स्वरूप को प्रकाशित करनेवाला मन्त्र एवं उनकी रसमयी सेवा प्राप्ति के लिये सर्वप्रथम रसिक जनों की सेवा, तत्पश्चात् गुरुदेव की कृपा से श्रीमहावाणी के सिद्धान्त सुख में वर्णित आकृति स्वरूप वृन्दावन को हृदयंगम करें।

ब्रह्ममुहूर्त में उठकर मन को एकाग्र करके सर्वप्रथम मन्त्र प्रदाता श्रीगुरुदेव एवं उनके सखी रूप को और फिर सम्प्रदाय प्रवर्तक श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य जी एवं उनके सखी रूप को श्रद्धापूर्वक नमस्कार करें। तत्पश्चात् श्रीगुरुदेव के बताये अनुसार निज निकुंज में सखी भाव से प्रवेश करें।

इहि विधि सहचरि भाव विचार ।
हौं सखियन सम कला निपुण अति, रमणी मनहरणी सुकुमार ।।
मिलन विधान युगल सेवारत, केलि दरस सुख दृग आहार ।
निजसुख वाँछा रहित हृदय में, प्रिय ते अधिक प्रिया सों प्यार ।।
युगल प्रिया गुरु आज्ञा लै लै, करौं टहल नित समैनुसार ।
अष्ट प्रहर युग लाड़ लड़ाऊँ, करुण दास पाऊँ सुख सार ।।

तत्पश्चात् श्री वृन्दावन का चिन्तन करें। फिर उन सखी-सहचरियों (गुरु रूपा सखी परम्परा) का चिन्तन करें जो श्रीप्रिया-प्रियतम की रसमयी सेवा में सदा तत्पर रहती हैं। इसके उपरान्त चिन्तन में सखी रूप से शय्या परित्याग कर स्नान एवं श्रृंगार आदि से स्वयं को सुसज्जित कर सेवा सौंज तैयार करे। तदनन्तर श्रीगुरु रूपा सखी एवं यूथेश्वरी जू की सेवा करें। तत्पश्चात् यूथेश्वरी श्रीरंगदेवी जी के यूथ के साथ नृत्य गान करते हुए मोहन महल के आँगन में प्रवेश करें। वहाँ पहुँचकर समस्त यूथेश्वरियों व यूथ की सखियों से सादर सप्रेम मिलें। इसके बाद सबके साथ मिलकर गायन द्वारा रस रीति से उत्त्थापन, मंगला, स्नान, श्रृंगार, कुंज-निकुंजों में उत्सव विलास, राजभोग, मध्यकालीन विश्राम, उत्त्थापन, वन-विहार लीला अन्तर्गत ऋतु अनुसार उत्सवों का विलास, संध्या आरती, रहस्य कुंज केलि, ब्यारू, शयन, रास, ब्याहुला की सेवा सम्पादन करें। फिर उपासक श्रीप्रिया प्रियतम की शयन सेवा करके सखी रूप से ही अपनी निकुंज में आकर शयन करे। इसकी सम्पूर्ण रीति अच्छी प्रकार से रसिक संतों या अपने गुरुदेव से सीख लेनी चाहिये।

गुरु हरि कृपा एवं अभ्यास द्वारा सखी भाव से सुख-सार का यह चिन्तन उपासक की बहिर्मुख वृत्तियों को अन्तर्मुखी बना देता है। उसको अन्तरंग सुख में स्थित कर देता है। इसमें स्थित होते ही उपासक समस्त सुखों का सार नित्य विहार सुख के साक्षात् दर्शन करने लगता है तथा अपने निज सहज सखी स्वरूप को प्राप्त कर लेता है।

इस प्रकार जो मंगला से शयन पर्यन्त अष्टयाम सुख-सार का चिंतन, गायन, पठन एवं श्रवण करते हुए सेवा रत रहेंगे वह दिव्यातिदिव्य सखी भाव देह को प्राप्त कर सकल सुखों के सार रसिक चूड़ामणि श्रीयुगलकिशोर की नित्य बिहार सेवा अवश्य प्राप्त करेंगे

चिंतन गायन पठन अरु,श्रवण कियें सुख-सार ।
सिद्ध सखी वपु पावहीं, निरखहिं नित्य विहार ।।

-किशोरी शरण

परम कृपालवे श्रीसद्गुरु भगवते नमो नमः

श्री राधासर्वेश्वरो विजयते **श्री निम्बार्कमहामुनीनद्राय नमः**

अष्टयाम

सुख-सार

अथ-सद्गुरु श्री करुण दास (श्री कृष्ण बिहारी शरण) जी महाराज कृत अष्टयाम सुख-सार लिख्यते।

वन्दना एवं प्रार्थना

दोहा

श्री निम्बारक आदिगुरु, श्री गुरुदेव पर्यन्त।
बंदउँ पद वर दीजिये, सुमिरौं राधा कन्त॥1॥
जयति जयति रँगदेवि जू, रँगभरि कृपानिधानि।
जयति परम उदार सखी, युगलप्रिया रसखानि॥2॥
प्रिया सखी को भाव दै, राखो अपने संग।
अष्टयाम सेवा करूँ, चढ़ै प्रेम रस रंग॥3॥

सखीभाव की धारणा

पद :–1

इहि विधि सहचरि भाव विचार ।
हौं सखियन सम कला निपुण अति, रमणी मनहरणी सुकुमार ।।
मिलन विधान युगल सेवारत, केलि दरस सुख दृग आहार ।
निजसुख वाँछा रहित हृदय में, प्रिय ते अधिक प्रिया सों प्यार ।।
युगल प्रिया गुरु आज्ञा लै लै, करौं टहल नित समैनुसार ।
अष्ट प्रहर युग लाड़ लड़ाऊँ, करुण दास पाऊँ सुख सार ।।

सखीभाव का अनुसरण

दोहा, पद :–2

धारि भाव हिय सहचरी, करि वृन्दावन वास ।
प्रात जागि निज कुञ्ज में, उर में भरि उल्लास ॥1॥
सैया उठि वन श्री निरखि, अलिगण कृपा मनाय ।
न्हाइ धारि भूषण बसन, सेवा सौंज सजाय ॥2॥
प्रथमहिं गुरु अलि सेइये, पुनि सेइये रँगदेवि ।
अष्ट प्रहर सुख लीजिये, करि पिय प्यारी सेवि ॥3॥
गुरु रूपा आदेस सों, रुख लै सेवा कीज ।
विलसन युगल किसोर की, देखि देखि रस पीज ॥4॥
इहि रीति रस पीजिये, नाहिन आन उपाय ।
करुण दास बिन रसिक जन, यह रस कौन पिवाय ॥5॥

वृन्दावन दर्शन

पद :– 3

चल मन श्रीवृन्दावन माहीं ।
जा मधि मोहन महल सुसोभित, कल्पतरू की छाहीं ।।
अष्टमोहिनी कुञ्ज सखी जन, सेवा सुख विलसाहीं ।
अष्टद्वार को महल मनोहर, जाकी पटतर[१] नाहीं ।।
ताके चहुँ दिसि चार सरोवर, सोभा हृदय लुभाहीं ।
ता आगे चहुँ ओर सखिन की, कुञ्ज प्रेम सरसाहीं ।।
रहसि कुञ्ज में ठौर ठौर पिय, प्यारी रस बरसाहीं ।
दिन प्रतिदिन नव नव महोत्सव, करत खेल सुख पाहीं ।।
अष्ट ह्रदनियाँ वन सुखकारी, देखत नैंन सिराहीं ।
निर्मल जल परिपूरित यमुना, घाट घाट टकराहीं ।।
खेलत नित्य जहाँ दोउ प्यारे, लखि सत काम लजाहीं ।
करुण दास वनराज छटा पै, बारबार बलि जाहीं ।।

भावुक सखी द्वारा गुरुरूपा सखी परम्परा गायन

पद :– 4

स्यामा स्याम कला जू हंसा । हरिणि हारिणी आदिक वंसा ।।
ह्रीणा हरिता मुग्धा स्निग्धा । सखी असन्दिग्धा जु विदग्धा ।।
श्री रँगदेवी जु नव्यवासा । विस्वाभा उत्तमा विलासा ।।
सरसा मधुरा श्री भद्रा जू । पद्मा स्यामा रु सारदा जू ।।
सखी कृपाला देवि सुन्दरी । पद्मालय इन्दिरा मञ्जरी ।।
रामा वामा कृष्णा रसवति । पद्माभा श्रुतिरूपा भगवति ।।
माधवि असिता गुणाकरी जू । श्री सुबल्लभा गौरांगी जू ।।

१ समानता

केसि पवित्रा अलि कुंकुमा। हितू सखी हरिप्रिया जु परमा ।।
हित अलबेली नित्य नवीना। मन गौरांगी गुण रसलीना ।।
सखी रूप रस प्रेम विलासा। सुक रति युगलप्रिया रहुँ पासा ।।
कुंदप्रिया गुरु कृपा मनाऊँ। युगल प्रिया पद पंकज पाऊँ ।।

युगलप्रिया गान
दोहा, पद :– 5

रंग रँगीली राधिका, रंग रँगीलो स्याम।
रंग रँगीली सहचरी, रंग रँगीलो धाम ॥1॥
छैल छबीली राधिका, छैल छबीलो स्याम।
छैल छबीली सहचरी, छैल छबीलो धाम ॥2॥
रंग भरी श्रीराधिका, रंग भर्‌यौ घनस्याम।
रंग भरी सब सहचरी, रंग भर्‌यौ श्रीधाम ॥3॥
गुण गरबीली राधिका, गुण गरबीलो स्याम।
गुण गरबीली सहचरी, गुण गरबीलो धाम ॥4॥
स्याम प्रिया श्रीराधिका, राधा प्रिय घनस्याम।
युगलप्रिया सब सहचरी, युगलप्रिया श्री धाम ॥5॥
कंचनमणि श्रीराधिका, नीलमणी घनस्याम।
बरन बरन मणि सहचरी, बहुरंगीमणि धाम ॥6॥
रासेस्वरि श्रीराधिका, रासेस्वर घनस्याम।
रास दरसिका सहचरी, रासभूमि श्री धाम ॥7॥
कुञ्जबिहारिनि राधिका, कुञ्ज बिहारी स्याम।
कुञ्ज सेविका सहचरी, कुञ्ज सजे श्रीधाम ॥8॥

भोरी भारी राधिका, अति चंचल घनस्याम।
चतुर सयानी सहचरी, अति अद्‌भुत श्री धाम ॥9॥
रास बिलासिनि राधिका, रास बिलासी स्याम।
रास करावति सहचरी, रास रचै श्री धाम ॥10॥
महाभाव श्रीराधिका, रसिक राज घनस्याम।
कायव्यूह सब सहचरी, बिहरत नित श्रीधाम ॥11॥
रसघन प्यारी राधिका, रसघन प्रियतम स्याम।
रसास्वादिका सहचरी, रस बरसै श्रीधाम ॥12॥
सर्वोपरि श्री राधिका, सर्वोपरि घनस्याम।
सर्वोपरि सब सहचरी, सर्वोपरि श्री धाम ॥13॥
सर्वेस्वरि श्रीराधिका, सर्वेस्वर घनस्याम।
युगल किंकरी सहचरी, सदा बसैं श्रीधाम ॥14॥
रसिक रसीली राधिका, रसिक रसीलो स्याम।
रसिक रसीली सहचरी, रसिक रसीलो धाम ॥15॥
मन मोहिनि श्रीराधिका, मनमोहन घनस्याम।
मन मोहिनि सब सहचरी, मन मोहन श्रीधाम ॥16॥
अलक लड़ी श्रीराधिका, अलक लड़ौ घनस्याम।
अलक लड़ी सब सहचरी, अलक लड़ौ श्रीधाम ॥17॥
तत्सुख सुखिया राधिका, तत्सुख सुखिया स्याम।
तत्सुख सुखिया सहचरी, तत्सुख सुखिया धाम ॥18॥
करुणामयि श्री राधिका, करुणामय घनस्याम।
करुणामयि सब सहचरी, करुणामय श्रीधाम ॥19॥

नवल किसोरी राधिका, नव किसोर घनस्याम।
नवल किसोरी सहचरी, कुंदप्रिया नव धाम ॥20॥

सखियों द्वारा युगल जागरण

दोहा

आँगन मोहन महल के, पहुँचि सखिन के संग ।
करहिं उथापन गाइ मिलि, बाजहिं बीन मृदंग ।।

चौपाई, पद :– 6

एक सखी लै वीना गावै। एक सखी मिरदंग बजावै ।।
एक सखी नाचे नचवावे। एक सखी मन मोद बढ़ावै ।।
एक सखी सुक पाठ पढ़ावे । एक सखी आँगन महकावै ।।
एक सखी परिहास सुनावे। एक सखी उर लाड़ लड़ावे ।।
एक सखी लै सौंज सजावै। एक सखी सौभाग मनावै ।।
एक सखी रँग चौक पुरावे । एक सखी सुभ कलस धरावै ।।
एक सखी मग पुष्प बिछावै । एक सखी चिन द्वार बनावै ।।
एक सखी नव रीति सिखावै । कुंदप्रिया लखि अति सुख पावै ।।

जागरण लीला

पद :– 7

जागहु मन के मीत दुलारे ।
भोर भई अब रैना बीती, लगे छिपन अम्बर में तारे ।।
अरुणाई छाई दिसि प्राची, चन्द मन्द है क्षितिज सिधारे ।
पिक सुक सारी मोर पपीहा, करत सरस रव अलि गुंजारे ।।

सीतल मन्द चलत पुरवाई, सुरभित कुसुम गन्ध विस्तारे ।
वृन्दावन फूली सब कलियाँ, मनु दरसन हित नैन उघारे ।।
दरस परस सेवा हित सहचरि, ठाढ़ीं कुञ्ज महल के द्वारे ।
कुंदप्रिया व्याकुल अब नैना, बिना युगल मुख चन्द्र निहारे ।।

मैना द्वारा युगल जागरण के लिये सखियों को रोकना
पद :–८

बैठी पिँजरे बरजति मैना ।
काँची नींद न सखी जगावहु, अबहिं पलक लगि नैना ।।
चौगुन चाव सुरति सुख बिलसत, बीती सारी रैना ।
सुधि बुधि भूल मगन रस दोऊ, कित चुनरी उपरैना ।।
ऐसौ खेल न देख्यौ कबहूँ, जुरी मैन की सैना ।
युगल रसिक दोउ हार न मानत, लेत न पल भर चैना ।।
देखहु श्रमकन[१] भाल सुसोभित, सुनि मानहु मम बैना ।
कुंदप्रिया भाँवती युगल की, यह चिक अबहिं उठैना ।।

सुरत सुख दर्शन
पद :–९

अति आनन्द उमँगि भरि फूली, मैना के बैना सुन सखियाँ ।
ओट लता छिप रंध्रन के मग, निरखति मिथुन लगाकै अखियाँ ।
बहुत दिनन की आस पुजाई, जो कछु हिय संजोये रखियाँ ।
कुंदप्रिया छबि रूप सुधारस, भरि भरि नैन कटोरनि चखियाँ ।

१ पसीना

सुरत सुख दर्शन
पद :– 10

तानि पिछौरी झीनि जु पौढ़े, सहजहिं करत सरस हँस बतियाँ ।
उरझैं अंग परस्पर सरसैं, दोउ लगावैं रस की घतियाँ ।
उमँगि अनंग[1] तरंगनि सों मिलि, करत किलोल अनेकन भतियाँ ।
कुंदप्रिया रंध्रन सों निरखति, सहचरि गण भई सीतल छतियाँ ।

सखियों का मोहन महल में प्रवेश
पद :– 11

निरखि केलि सुख देत बधाई ।
जै जै बलि बलि सब्द उचारति, सखी मगन मन मंगल गाई ।।
अग्रवर्ति[2] की नैन सैन लखि, युगल प्रिया चिक दीन्ह उठाई ।
सहचरि चलि चित चोंप चाव भरि, उँमगति रंग महल में आई ।।
आवति अली जानि उठि बैठे, भूषण पट अविलम्ब धराई ।
कुंदप्रिया लखि युगल चन्द्र छवि, सखियन की अँखियन जल छाई ।।

सखियों द्वारा युगल को लाड़ लड़ाना
चौपाई, पद :– 12

कोऊ सहचरि चँवर ढुलावैं । कोऊ युगल चरण सहरावैं ।।
कोऊ करन्ह मसकि मुसकावैं । कोऊ चिबुक[3] परसि दुलरावैं ।।
कोऊ लट उरझी सुरझावैं । कोऊ पट चुनरी सँभरावैं ।।
कोऊ मंगल गीत सुनावैं । कोऊ निरखि निरखि सुख पावैं ।।
कोऊ मन महँ लाड़ लड़ावैं । कोऊ पुलकि पुहुप[4] बरसावैं ।।
कोऊ हँसि रति चिन्ह दिखवावैं । कुंदप्रिया मन मोद बढ़ावैं ।।

१ दिव्य काम अर्थात् प्रेम २ रंगदेवी ३ ठोढ़ी ४ पुष्प

सखियों द्वारा हास – परिहास करना
पद :– 13

हँसि पूछति हित सों सहचारी ।
पट चुनरी मणि माल गले की, उलटि पुलटि कहु केहि विधि धारी ।।
केहि विधि लागी पीक कपोलन, केहि विधि अधरन काजर कारी ।
केहि विधि जावक[१] लग्यो भाल उर, केहि विधि उरझी लट घुँघरारी ।।
कमल नैन अरुणाई केहि विधि, देह सिथिल अरु आरस भारी ।
उर नख छत माला मर्दित भइ, केहि विधि रदन[२] छदन कहु प्यारी ।।
बेनी की मुक्ता लर टूटी, केहि विधि चूरी चटकी चारी ।
कुंदप्रिया रति चिन्ह छिपे नहिं, झीनो पटुका देह उजारी ।।

मंगल दर्शन
पद :– 14

जोरी लटकति आँगन आई ।
उरझे दृग श्रृंगार बसन सब, उर उमंग अति तन अरसाई ।।
देत चुटकि झट रसिक सिरोमनि, प्यारी जू जब लेत जँभाई ।
तबहूँ नैना लगे प्रिया मुख, यद्यपि आरस बस अँगराई ।।
मणी आरसी[३] सखी दिखावति, दोउ रति चिन लखि गये सकुचाई ।
श्री रँगदेवि सँवारति पौंछति, प्रिया लाल मुख लखि मुस्काई ।।
दोउ रस मगन रहत निसि वासर, तन मन की सब सुधि बिसराई ।
कुंदप्रिया तृण तोरति छवि पै, बाढ़्यौ प्रेम न हृदय समाई ।।

श्रीप्रिया प्रियतम का मंगल कुञ्ज के लिये जाना
पद :– 15

मंगल कुञ्ज चले पिय प्यारी ।
दोऊ बतरस छबिरस लोभी, ह्वै बस सरस परस सुखकारी ।।
बिछुवा नूपुर कंकन कौंधनि, धुनि प्रीतम हिय रस सञ्चारी ।
कुंदप्रिया दोउ छीनि हंस गति, चलत देखि सहचरि बलिहारी ।।

१ महावर २ दाँत ३ दर्पण

मंगल कुञ्ज शोभा वर्णन

पद :– 16

पीत मणिन सों चम चम चमकति, मंगल कुञ्ज अतिहिं सुखदाई ।
पीत कुसुम लरि लटकति सुन्दर, बिच बिच मणि दुति लेत लुभाई ।
पीत मणी दीपावलि दीपति, चहुँ दिसि पीत खिली फुलवाई ।
पीत पहरि पट प्रीतम प्यारी, कुंदप्रिया आये छबि छाई ।

सखियों द्वारा मंगल कुञ्ज में युगल सेवा

पद :– 17

रतन जटित चौकी पधराये, सुरभित जल कर मुख धुलवायो ।
मञ्जन करि दोउ बैठे आसन, सहचरि मणि दर्पण दिखरायो ।
चरचि सुगन्ध अनेक प्रकारा, सकल बसन अँग अँग महकायो ।
कुंदप्रिया पिय प्यारी आगे, सखियन मंगल भोग धरायो ।

सखियों द्वारा युगल को मंगल भोग आरोगवाना

पद :– 18

भोग अरोगत लाड़ लड़ीले ।
लाड़ चाव भरि परसति सहचरि, देत लेत मुख छैल छबीले ।।
मोदक[१] माखन मिसरी खोआ, दाख छुआरा मिष्ट रसीले ।
केसर मिश्रित दूध मलाई, रबड़ी सरबत सब महकीले ।।
मंगल भोग सरस रस बतरस, मंगल बेला गीत सुरीले ।
मंगल रूपसुधा रस पीवत, मंगल मूरति रंग रँगीले ।।
तृप्त जानि अँचवाय नीर अरु, पौंछि बदन कर किये उजीले ।
रचि बीरी[२] महकनी खवावति, कुंदप्रिया सब भए सरसीले ।।

१ लड्डू २ पान

मंगल आरती
पद :– 19

मंगल आरति गाऊँ भोर । मंगल दरसन युगलकिसोर ।।
पीत कुञ्ज अरु पीत सिँहासन, पीत वसन धरि बैठे आसन ।
पीत चंद्रिका पगड़ी मोर, मंगल आरती गाऊँ भोर ।।
पिय प्यारी की प्यारी मुस्कन, अवलोकत चोरत सबकौ मन ।
मंगल मूरति जन चित चोर, मंगल आरती गाऊँ भोर ।।
भाँति भाँति सों लाड़ लड़ाऊँ, अनुदिन निरखि निरखि सुख पाऊँ ।
दोउन पै डारूँ तृन तोर, मंगल आरती गाऊँ भोर ।।
रँगदेवी आरती उतारै, युगलप्रिया जै सब्द उचारै ।
कुंदप्रिया लखि भाव विभोर, मंगल आरती गाऊँ भोर ।।

मंगल कुञ्ज लीला
पद :– 20

जै जैकार करति सहचरि गण, लै लै पुष्पाँजलि बरसावैं ।
नाचति गावति यन्त्र बजावति, लालन के मन मोद बढ़ावैं ।।
वनश्री[१] निरखन को रँगदेवी, मणि मण्डल दोऊ पधरावैं ।
बैठत ही खग मृग सब आये, लाल प्रिया लखि लखि हरषावैं ।।
हंस चकोर मयूरी मैना, शुक पिक मोर किलोल दिखावैं ।
निज कर स्यामा स्याम मुदित मन, सबकूँ मेवा मिष्ट खवावैं ।।
हरिणी सावक[२] को प्यारी जू, दै मुख मोदक लाड़ लड़ावैं ।
कुंदप्रिया हरषित ह्वै सब मिलि, भाँति अनेकन खेल रचावैं ।।

१ वन की शोभा २ हरिणी का बच्चा

वन बिहार

पद :– 21

वन विहरत पिय सँग अलबेली ।
निरखति वन श्री चहुँ दिसि सहचरि, सुंदरि मञ्जरि सखी सहेली ।।
कबहुँ जोरि प्रीतम भुज सों भुज, चलत जु कबहुँक ठुमकि अकेली ।
कबहुँ सखिन सों मिलि बतरावति, लखति कबहुँ खग मृग द्रुम बेली ।।
कबहुँक सघन लता कुञ्जन में, खेलत दुरा–दुरी[१] की केली ।
कबहुँ सँकुच अति हरष कबहुँ लखि, प्रीतम की नव नव अठखेली ।।
मन हरनी सुख करनी प्यारी, सहचरि जन की लाड़ गहेली ।
कुंदप्रिया निसि वासर निरखति, लागति नित नित नई नवेली ।।

सखी द्वारा श्रीप्रिया जू को स्नान कुंज चलने के लिये समझाना

पद :– 22

जानि अबेर सखी समुझावति ।
देख तरनि[२] को भयो उजियारो, सुनहु प्रिया अलि टेर बुलावति ।।
स्नान कुञ्ज मधि सौंज[३] सजी सब, केलि सनान तुमहिं अति भावति ।
कुंदप्रिया जनि देर करहु अब, रचना कुञ्ज देखि बनि आवति ।।

फुव्वारा स्नान

पद :– 23

स्नान निकुञ्ज मणीमण्डल पर, जल यन्त्रन[४] की होत बुछारी ।
देखत ही जल कौतुक सुन्दर, न्हान निकुञ्ज की सौंज बिसारी ।
थेई थेई नृत्यत दोऊ, भेद दिखावत विविध प्रकारी ।
क्रीड़त भीजत नागरि नागर, कुंदप्रिया लखि लखि बलिहारी ।

१ लुका–छिपी २ सूर्य ३ सेवा सामग्री ४ फुव्वारे

विधिपूर्वक स्नान कराना

चौपाई, पद :– 24

पिय प्यारी जोरी सुखदाई। न्हान निकुञ्ज सुदेवि बुलाई ॥1॥
रतन खचित चौकी पधराई। लाल प्रिया राजैं हरषाई ॥2॥
आई सखि सब सौंज सजाई। अति आनन्द न हृदय समाई ॥3॥
दंपति सुख बिनु कछु न सुहाई। इहि सुख महँ नित रहहिं छकाई ॥4॥
करि पट ओट प्रिया जु लुकाई। पिय अखियाँ देखन ललचाई ॥5॥
एक एक पट तन लिपटाई। बिन भूषण भूषित विवि राई ॥6॥
दोउन को उबटना लगाई। परसत सकुचत लखि मृदुताई ॥7॥
सुन्दर केस फुलेल रमाई। गौर स्याम वपु गन्ध रचाई ॥8॥
गौर स्याम तन सुषमा छाई। गोरे अंगन तेज सवाई ॥9॥
झीनो बसन न सकै छिपाई। बिच बिच निरखत पिय पुलकाई ॥10॥
उचक उचक हरि नैन चलाई। बरजति सखि तरजनी उठाई ॥11॥
अवलोकें बिन अंग निकाई[१]। पलहू प्रियतम रह न सकाई ॥12॥
सुनि प्रियतम की आकुलताई। प्यारी जू मन अति सकुचाई ॥13॥
सखि सुरभित जल घट लै आई। सीत उष्ण दुहु लिये मिलाई ॥14॥
गीत गाइ मृदु यंत्र बजाई। विधि पूर्वक अस्नान कराई ॥15॥
पट कोमल तन केस सुखाई। रितु अनुसार सुवसन धराई ॥16॥
बीच वसन सो दियो गिराई। प्रिया अंग जनु ससि प्रकटाई ॥17॥
सागर सम स्यामा सुठिताई[२]। स्याम नैन कहुँ थाह न पाई ॥18॥
पाँवरि[३] मृदुल चरन पहराई। धरि भुज अंस चले उमगाई ॥19॥
प्रेम विवस दृग मन उरझाई। निरखि सहचरी अति हुलसाई ॥20॥
प्रीति परस्पर अति अधिकाई। कुंदप्रिया बरनी नहिं जाई ॥21॥

१,२ सौन्दर्य ३ चरण पादुका

वन बिहार करते हुए श्रृंगार कुञ्ज पहुँचना

पद :- 25

चाल मराली[१] मणि मग विचरत, दोउ दिसि वन फूली फुलवारी ।
रसिक सिरोमनि अति रस भीने, बतरस लोभी प्रेम खिलारी ।
कौतुक करत अनेक प्रकारा, लखि लखि मुस्कावति सहचारी ।
कुंदप्रिया हुलसावति गावति, जोरी आई कुञ्ज श्रृँगारी ।

श्रीप्रिया प्रियतम का श्रृंगार

पद :- 26

सखियन लाड़िली लाल श्रृंगारे ।
नील पीत तन बसन धराये, सुन्दर जरी किनारे ।।
भाँति भाँति के भूषन लै लै, अँग अंगन में धारे ।
मुकुट चन्द्रिका कुण्डल झुमके, बेंदी तिलक सँवारे ।।
नासाग्रे मुक्ता नथ नीकी, लट चिक्कन घुँघरारे ।
बरन बरन बहु भाँति कण्ठ में, हार मणिन रतनारे ।।
बाजूबंद जटित मणि कंकन, चूड़िन के चमकारे ।
नामाँकित मणि मुदरी सोभित, मुरली कमल सँभारे ।।
करधनि लटकनि पायल नूपुर, बिछियन के झंकारे ।
कुंदप्रिया या युगल छटा पैं, कोटि अतन रति वारे ।।

प्रिया जू का दर्पण देखना

पद :- 27

लखि प्रतिबिम्ब प्रिया मुसकाई ।
बार बार मणि दर्पण झाँकति, निज मुख ससि लखि आप लुभाई ।।
पत्रक रचना अञ्जन तिल नथ, मानो कुंदन गंध समाई ।

१ हंस जैसी चाल

कजरारे चञ्चल दृग मानो, फुल्ल कञ्ज[१] द्वै अलि[२] मँडराई ।।
अति सुकुमारी लाड़ लड़ीली, भोरी अलबेली पिय भाई ।
कुंदप्रिया प्यारी को मुख लखि, प्रीतम स्याम गये बौराई ।।

सखियों द्वारा युगल दर्शन

पद :– 28

पीवति सहचरि रूप सुधा रस ।
चरचि गन्ध बैठारे आसन, युगल किसोर प्राण धन सरवस ।।
अवलोकत अनिमिष अखियन सों, दृष्टि होत नहिं नेकहु टस मस ।
रूप सिन्धु छबि जल दृग मीना, इक पल रहत सकैं नाहिं निकस ।।
लखि विवि रूप भई मनवाँछा, निरखति रहूँ नयन भए छबि बस ।
जै जै बलि बलि कहि हुलसावति, हरषित कुंदप्रिया गावति यस ।।

श्रृंगार भोग

पद :– 29

जेंवन[३] बैठे दोउ सुकुमार ।
दोउन बीच कनक चौकी पै, परसत अलिगन भोग श्रृँगार ।।
मोदक मोहनभोग मलाई, खुरमा घेवर सक्करपार ।
मेवा बर्फी मठरी गुजिया, देवहिं समुद करहिं मनुहार ।।
मिष्ट तिक्त खट्टे अरु लूने, व्यंजन महक मसालेदार ।
देत कौर दोउ बदन परस्पर, हँसत नैन में नैना डार ।।
हँसि बतियात लखैं जब सहचरि, उर उमगत आनंद अपार ।
अँचवन करि सुरभित रस बीरा, आरोगत हिय में भरि प्यार ।।
निरखि सखी सब लेत बलैयाँ, प्रियतम प्यारी परम उदार ।
आरति हित बैठे सिंहासन, कुंदप्रिया सखि लखि बलिहार ।।

१ कमल २ भ्रमर ३ भोजन करना

श्रृंगार आरती
पद :–30

आवो सखि मिल आरति गावो । लाल प्रिया कूँ लाड़ लड़ावो ।।
रतन सिंहासन दोउ विराजैं, नील पीत पट तन पै साजैं ।
निरख निरख झाँकी सुख पावो, आवो सखि मिल आरति गावो ।।
चंद्र बदन की सोभा प्यारी, बड़ी बड़ी अखियाँ कजरारी ।
इन नैनन सों नैन मिलावो, आवो सखि मिल आरति गावो ।।
नील कमल कर मुरली सोहै, अंग अंग छबि मन कूँ मोहै ।
नैन द्वार लै हिये बसावो, आवो सखि मिल आरति गावो ।।
अग्रवर्ति[१] आरती उतारैं, तन मन धन सब इन पै वारैं ।
कुंदप्रिया बलिहारी जावो, आवो सखि मिल आरति गावो ।।

सखियों द्वारा युगल की जै जैकार
पद :–31

जै श्रीराधा जै श्रीकृष्ण, जयति जै श्री राधाकृष्ण ।
जै श्रीराधा वल्लभ कृष्ण, जयति जोरी राधाकृष्ण ।
जै श्रीराधा जन मन रंजन, सुख संजन श्रीराधाकृष्ण ।
जै श्रीराधा भव भय भंजन, दुख गंजन श्रीराधाकृष्ण ।
जै श्रीराधा नैना खंजन, मन फंदन श्रीराधाकृष्ण ।
कुंद करै किर्तन पद वंदन, विवि चंदन श्रीराधाकृष्ण ।

१ रंगदेवी जू

वन बिहार एवं वन का रस उद्दीपनकारी रूप

पद :–32

दे गलबइयाँ बिहरत दोऊ, निरखत वन सुषमा अति प्यारी ।
द्रुम सौं लिपटी बेलि करत है, पिय हिय में रस को संचारी ।।
दै दै परस सुखद अँग अंगन, सरसावति रस त्रिविध बयारी ।
मोर पपीहा कोकिल कलरव, तन मन अतन[१] करे विस्तारी ।।
फूलन पै रस लोभी मधुकर, बरबस करत अनंग[२] पुजारी ।
मैना पढ़ती केलि कहानी, सुप्त मनोज[३] जगावन हारी ।।
लखि सोभा रितुराज बसंतहि, लेत हिलोरें रसिक बिहारी ।
कुंदप्रिया श्री धाम रँगीलो, कण कण रस उद्दीपन कारी ।।

रहसि कुञ्ज बिहार

पद :–33

देखहु सजनी युगल बिहार ।
रहसि निकुञ्ज वितन[४] रस बरसै, कैसी अद्भुत छाइ बहार ।।
प्यारी जू प्रियतम सँग बिहरत, अलबेले दोउ चतुर खिलार ।
कनक लता छइ स्याम तमालहिं, रस फूली झूली हर डार ।।
देखहु नील मणी पर्वत पै, दामिनि को अति होत उजार ।
नैना सुफल करहु री सजनी, कुंदप्रिया निरखहु सुख सार ।।

अष्टद्वारी महल की रंगदादि अष्टकुञ्जों में युगल बिहार

पद :–34

कुञ्ज कुञ्ज विहरैं पिय प्यारी ।
रसिक सिरोमनि दोउ रस मूरति, ठुमकि चलत गलबइयाँ डारी ।।
रंगद रसद रहसि वसुदा कुँज, बिहरत रस रत कुञ्जबिहारी ।

१,२,३,४ दिव्य काम अर्थात् प्रेम

विसद विचित्र अमितकला अमृत, कौतुक नवल करत रुचिकारी ।।
दुरादुरी कंदुक[१] खग मृग सौं, दोऊ क्रीड़त सँग सहचारी ।
कुंदप्रिया इक कह्यौ न जाये, कहौं कहाँ लौं खेल हजारी ।।

राजभोग कुञ्ज के लिये जाना

पद :-35

भोजन करन चले सुकुमार ।
जानि बुलावत चम्पक लतिका, लगी भूख अति प्रेम विचार ।।
चले जात तरुअन की छइयाँ, बिच बिच छौरत हँसी फुवार ।
कबहुँ चलैं दोउ घन छाँहीं सँग, चलत होत लीला विस्तार ।।
कबहुं सखी पट तानि दोउन पै, तरनि तेज सों करति सँभार ।
पहुँचि कुञ्ज कर चरण धुवाये, कुंदप्रिया चौकी बैठार ।।

राजभोग

दोहा, पद :-36

छप्पन भोग अतिहिं सरस, छतीस व्यंजन संग ।
षटरस[२] भोजन चतुर विधि[३], परसति सखि सोमंग ।।

चौपाई

कटि पटुका अरु हार मुद्रिका । उतराये सिर मुकुट चंद्रिका ॥1॥
दुहुन बीच चौकी पधराई । ता पै भोजन थार धराई ॥2॥
निरख परस्पर अति अनुरागे । राजभोग आरोगन लागे ॥3॥
प्रीति विवस पिय करि मनुहारी । प्रथम कौर दीनी मुख प्यारी ॥4॥
चम्पा करि संकेत बतावै । सकुचि प्रिया प्रीतमहि खिलावै ॥5॥
खट मिठ लूने तिक्त कषाये । व्यंजन बहुत गिने नहिं जाये ॥6॥

१ गेंद २ मीठा,नमकीन,खट्ठा,तीखा,कटु,कसैला ३ पीने,खाने,चाटने,चूसने वाले भोजन

खीर मलाई केसर डारी। राजभोग इमरति सुहारी ॥7॥
घेवर रबड़ी गुलाबजामन। छेना बर्फी मोदक खुरचन ॥8॥
रसगुल्ला मठरी अरु खुरमा। निकुती सरसमलाई चुरमा ॥9॥
चन्द्रकला अरु बालूसाई। दूध जलेबी सिता मलाई ॥10॥
गुजिया फेनी सक्करपारे। बूँदी पेठा पेड़ा न्यारे ॥11॥
सरस कलाकँद मिसरी माखन। सेवइँ हलवा श्रीखंड सिखरन ॥12॥
मोहनथार गुलगुले नीके। मेवावाटी तिलपटि घी के ॥13॥
सहचरी लाईं भोग सलूनो। याते स्वाद बढ्यौ अब दूनो ॥14॥
रोटी चना बाजरा जौ की। साक सैंगरी सहजन लौकी ॥15॥
बैंगन तोरइ अरबी आलू। बथुआ टैंटी मठा कचालू ॥16॥
दाल चनादिक विविध प्रकारा। कटहल कद्दू कलि कचनारा ॥17॥
सीमफली अरु छाछ-राबड़ी[१]। कमलकंद ल्हेसुवा पापड़ी ॥18॥
दलिया चावल कढ़ी पकौड़ी। चीला पूआ दही कचौड़ी ॥19॥
पूड़ी पापड़ पालक केला। दहीबढ़ा रायता करेला ॥20॥
भुजिया चौराई जीमीकँद। ग्वारफली परमल सक्करकँद ॥21॥
मटर करौंदा मेथी भिंडी। पात चना मंगोरी टिंडी ॥22॥
चटनी मिर्च पुदीना अदरख। नींबू धनिया इमली कमरख ॥23॥
नींबू आँवल आम अचारा। सब कुछ महक मसालेदारा ॥24॥
अन्न अंकुरित ककड़ी खीरा। विविध पात कँद मूलि पनीरा ॥25॥
मीठी छाछ दही घी बूरा। कचरी खिचरी रस अमचूरा ॥26॥
काँजी पना सिकन्जी सीरा। लेह मुरब्बा जल जलजीरा ॥27॥
भाँति भाँति के बने पकौड़े। लूने व्यंजन बहुत न थोड़े ॥28॥
चीकू केला नाक सिँघारा। चिलगोजा अमरूद छुआरा ॥29॥

१ छाछ से बनी बाजरे की खिचड़ी

खिरनी जामुन सेब अँगूरा। लौंग चिरौंजी इला खजूरा ॥30॥
पिस्ता पीलू कीनू श्रीफल। चाकोतर खरबूज रामफल ॥31॥
दाख फालसा खस बादामा। नारियलाम्बु[१] मरवाना आमा ॥32॥
मौसम्मी संतरा नारियल। लीची रसभरि अरु सीताफल ॥33॥
अँवली आडू आलुबुखारा। अनानास अंजीर अनारा ॥34॥
ईख पपीता काजू चेरी। मग अखरोट मुनक्का बेरी ॥35॥
मूँगफली सहतूत खुमानी। मधुर नासपाती सब आनी ॥36॥
व्यंजन बहुत कहाँ लौं गाई। आरोगत दोउ करत बढ़ाई ॥37॥
तृप्त जानि अलि जल अँचवावै। ललिता रचि ताँबूल खवावै ॥38॥
सिंहासन बैठे जनरंजन। सहचरि करन लगी नीराजन[२] ॥39॥
भोग समै जें यह पद गावैं। कुंदप्रिया दोउ भोग लगावैं ॥40॥

भोग चलीसा गान सों, जो कछु परस्यौ जाय।
खिचरिहु छप्पन भोग सम, मानि युगल रुचि खाय ।।

राजभोग आरती
पदः – 37

राज भोग आरती उतारो । नैनन रस भरी छबि निहारो ।।
सुरभित सरस पान को बीरा, दोउ आरोगत प्रेम अधीरा ।
मँद मुस्कान रूप अति प्यारो, राज भोग आरती उतारो ।।
छैल छबीली सुंदर जोरी, छबि रस पीवति अखियाँ मोरी ।
इन बिन षट् रस लागत खारो, राज भोग आरती उतारो ।।
गलबहियाँ दे बैठे प्यारे, इक पल होय सकैं नहिं न्यारे ।
जोरी निरखि निरखि हिय धारो, राजभोग आरती उतारो ।।

१ नारियल का पानी २ आरती

दोउन पे जल वार पियोरी, युगल रसिक मुख देख जियोरी ।
कुंदप्रिया जय सब्द उचारो, राज भोग आरती उतारो ।।

सखियों द्वारा राधा रानी की जै जैकार

पद :-38

जै स्यामा जै सारँग नैनी, कोकिल बैनी स्यामप्रिया जू ।
जै स्यामा जै सोभा सैनी, मोभा मैनी कृष्णप्रिया जू ।
जै स्यामा जै सब सुख ऐनी, जन सुख दैनी सखिनप्रिया जू ।
जै स्यामा जै मनहर लैनी, जै गजगैनी कुंदप्रिया जू ।

प्रफुल्लित सखियों में भावोन्माद

पद :-39

एक सखी लखि लेत बलैयाँ, एक सखी जै सब्द उचारे ।
एक सखी करि नृत्य रिझावै, एक सखी तृण तोरति डारे ।
एक सखी ले चँवर डुलावै, एक सखी पीवै जल वारे ।
कुंदप्रिया परसाद युगल को, जेंवति सहचरि रस विस्तारे ।

सखी की प्रार्थना सुनकर युगल का मोहनमहल के लिये प्रस्थान

पद :-40

अरसाई लाडो मृगनैनी ।
अरसाये दृग लखि स्यामा के, बोली युगलप्रिया पिक बैनी ।।
रंग महल की सज्जा करि पुनि, गंध चरचि आई गज गैनी ।
चलहु वेगि प्रियतम सँग सजनी, फूलन सेज सजी सुख दैनी ।।
सहचरि वचन सुनत पिय ठाढ़े, कहत चलहु स्यामा सुख लैनी ।
अंस भुजा धरि चले युगलवर, कुंदप्रिया जोरी रस ऐनी ।।

वर्षा सुख विलास

पद :– 41

चलत राग गावत मल्हारी ।
मन महुँ मोद भरे दोउ चालैं, लचक लहर लें सुर इकसारी ।।
चहुँ दिसि घोर घटा घिरि आईं, चले दूर कछु जबहि बिहारी ।
रिमझिम बदरा बरसन लागे, ठाढ़े द्रुम तर पकर सुडारी ।।
बोले प्रियतम तानि पिताम्बर, लेहु ओट ढाँपहु तनु प्यारी ।
कुंदप्रिया सखि लखि हुलसावति, बैठे दोऊ भरि अँकवारी ।।

वर्षा रस विलास

पद :– 42

देख सखी! वर्षा सुखदाई ।
पीत स्याम घन गरजत उमड़त, मनही लेत लुभाई ।।
कबहूँ तड़ित चमक विस्तारे, कबहूँ जात छिपाई ।
त्रिविध समीर सुखद तन परसति, रोम रोम सरसाई ।।
बरसत अतन जतन के बदरा, सोभा बरनी न जाई ।
कुंदप्रिया इहि सुखद सुवेला, पिय प्यारी सुख पाई ।।

मंत्रपीठ वर्णन

चौपाई, पद :– 43

मण्डल मणी कलपतरु वर तर। बैठे श्री राधा सर्वेस्वर ॥1॥
अरुण वरण अठकोंन सिँहासन। कोंन कोंन फबि सखी मुदित मन ॥2॥
उत्तर दिसि रँगदेवी ठाढ़ी। करतल भूषण प्रीती गाढ़ी ॥3॥
इनकी प्यारी अष्ट सहेली। तिहुँ दिसि ठाड़ी अति अलबेली ॥4॥
कलकण्ठी अरु प्रेममञ्जरी। कामलता कमला हितसुँदरी ॥5॥
कंदर्पा ससिकला जु प्यारी। सखी प्रेमदा प्रेम प्रचारी ॥6॥

ठाढ़ी दिसि ईसान सुदेवी। हस्त सुगन्ध युगल वर सेवी ॥7॥

हारकण्ठि कबरा कावेरी। मञ्जुकेसि मनहर विवि नेरी ॥8॥

सखी महाहीरा जु सुकेसी। प्यारि हारहीरा सुचि बेसी ॥9॥

पूरब दिसि अति सोहे ललिता। लै बीड़ा ठाढ़ी रस भरिता ॥10॥

रतनप्रभा रतिकला सुभद्रा। सुन्दरमुखी धनिष्ठा भद्रा ॥11॥

कलापिनी कलहंसी प्यारी। ये सब ललिता की सहचारी ॥12॥

अगनी दिसा विसाखा सोहे। करत बसन सज्जा मन मोहे ॥13॥

सुरभि माधवी चपला हिरनी। चन्द्रलेखिका सुन्दर बरनी ॥14॥

सुभानना मालती कुञ्जरी। सखी विसाखा केर मञ्जरी ॥15॥

दक्षिण चंपकलतिका प्यारी। करवावति रुचिकर ज्यौंनारी ॥16॥

मँडली सुभचरिता चन्द्रा जू। कन्दुकनैनी मणिकुँडला जू ॥17॥

चन्द्रलता जु सुमँदिरा प्यारी। मृगलोचनि चम्पक सखि सारी ॥18॥

दिसि नैरित चित्रा सहचारी। ठाढ़ी रसबोरी लै वारी ॥19॥

सौर सुगन्धा नागर बेली। तिलकनि जू कामिलाऽलबेली ॥20॥

कामनागरी रसालिका जू। श्री बरवेनी सुसोभना जू ॥21॥

ये सब चित्रा की सहचारी। निसि वासर सेवहिं पिय प्यारी ॥22॥

दिसि पच्छिम श्री तुँगविद्या जू। गावति लै संगीत समाजू ॥23॥

मधुर ईक्षणा मंजु मेधिका। मधुरा गुणचूड़ा सुमेधिका ॥24॥

वरांगदा मधुस्यंदा प्यारी। तनमेघा मिलि गावहिं सारी ॥25॥

ये सब तुँगविद्या की सखियाँ। पी प्यारी को रखती अखियाँ ॥26॥

वायु कोन में इन्दूलेखा। जानति कोक कला कर लेखा ॥27॥

चित्र लेखिका तुँगभद्रा जू। श्री चित्रांगी रसतुंगा जू ॥28॥

सुमंगला मोदनि रँगवाटी। मंदालसा पढैं रस पाटी ॥29॥

जानति रस परिपाटी सारी। इन्दुलेखिका की अति प्यारी ॥30॥

प्यारी जू की अंग सरूपा। इनहीं सी सब रूप अनूपा ॥31
इन समान सखि केवल ये ही। जिनके युगल रसिक सुसनेही ॥32
रूप वयस गुण में सम सारी। स्यामा सों नहिं तनिकहुँ न्यारी ॥33
चकडोरी[1] सी फिरहिं टहल में। रुनकि झुनकि रव करति महल में ॥34
दम्पति सँग छाया सी डोलैं। मनु मुख फूल झरत जब बोलैं ॥35
भावइ मन पिय प्यारिहि जोई। हरषित करहिं सवायो सोई ॥36
तन ते न्यारी मन ते एका। हिये युगल सुख एकहि टेका ॥37
युगल प्रिया सब सखी सहेली। रहति सदा रस भरि अलबेली ॥38
लै लै सौंज खड़ी चहुँ ओरी। कहें नमो जै सब रस बोरी ॥39
कुंदप्रिया श्री हरि के पासा। जै जै उचरहि उर उल्लासा ॥40

सखियों द्वारा श्रीराधासर्वेश्वर की जै जैकार एवं नमस्कार

पद :– 44

जै जैकार करति प्रमदागन, रुख लै सनमुख ठाढ़ी सारी।
श्रीराधासर्वेस्वर की जै, कहति नमो जै बारम्बारी।
जै श्रीराधा जै श्रीकृष्णा, जयति नमो श्रीयुगलबिहारी।
कुन्दप्रिया सब निकट निहारैं, अद्भुत लीला की बलिहारी।

श्रीप्रिया प्रियतम का मंत्रपीठ से चलकर मोहनमहल की शैया विश्राम

पद :– 45

मीत चले दोउ दे गलबहियाँ।
रस में पागे चलत बिहारी, धीरे धीरे तरुवर छहियाँ।।
चमकत दमकत तन पट भूषण, चहुँ ओरी सँग चालैं सहियाँ।
लखहिं मुदित मन सब प्रमदागन, आये मोहन महल जु महियाँ।।
फूलन सेज सजी अति कोमल, पी प्यारी पौढ़े इक ठहियाँ।
कुंदप्रिया चिक डारि सखी सब, निरखहिं रंध्रन भरहिं उमहियाँ।।

१ घूमने वाला लकड़ी का लट्टू (खिलौना)

सखियों के हृदय उद्गार

पद :– 46

विलसन दोउन की मनभाई ।
देख सखी नवरंग बिहारी, बिलसत सुधि बिसराई ।।
रंग रँगीले छैल छबीले, रस भीने मनराई ।
कुंदप्रिया यह छवि दृग मन में, अविचल चहत बसाई ।।

सखी द्वारा रस विलास वर्णन

पद :– 47

देखो आज निकुञ्ज सदन में, राजत युगल किशोर री सजनी ।
सहचरि जाय झरोखन लागीं, निरखति नैनन कौर री सजनी ।।
रस रंजन सुख संजन विलसत, रास रसिक सिरमौर री सजनी ।
वेगि चलहु सुख सार निरखिये, रंग जम्यौ बड़ जोर री सजनी ।।
निरखत नैना तृप्ति न माने, या सुख को नहिं छोर री सजनी ।
लाल प्रिया मिलि ऐसेहिं बिलसैं, निसिदिन संध्या भोर री सजनी ।।
युगलप्रिया रस माती निरखै, ह्वै अति भाव विभोर री सजनी ।
कुंदप्रिया मम सबरे अंगनि, लागैं नैंन करोर री सजनी ।।

सखियों के हृदय उद्गार

पद :– 48

आज सजनियाँ भई मनभाई ।
नैन धरे को लाभ मिल्यो सखि, कहा सुनाऊँ गाई ।।
लालप्रिया दोउ दियो अलभि सुख, मुख सों कह्यौ न जाई ।
नैन जीह बिन जीह नैन बिन, वर्णन ह्वै न सकाई ।।
को स्यामा को स्याम बिहारी, समुझ कछू नहिं आई ।
यह सुख पावै केवल सोई, जाके भाग लिखाई ।।
श्रमित भये दोऊ अरसाये, निंदिया आन सुलाई ।
कुंदप्रिया यह अविचल जोरी, बिहरैं कुञ्ज सदाई ।।

उत्त्थापन सेवा मे संलग्न सखियाँ

पद :– 49

सहचरि निज निज सौंज सजावैं ।
मगन भई सबहीं रस माती, मन ही मन युग लाड़ लड़ावैं ।।
सरबत मिष्ट मिलावैं कोऊ, व्यंजन सजि मणि थार धरावैं ।
कुसुम कली चुन लावैं कोऊ, फूलन मनहर हार बनावैं ।।
निर्तत यन्त्र बजावैं कोऊ, मिथुन उठन की बाट जुहावैं ।
कुंदप्रिया श्री युगलप्रिया सँग, सौरभ छिरकि महल महकावैं ।।

सखियों द्वारा श्रीप्रिया प्रियतम का उत्त्थापन (जागरण) कराना

पद :– 50

तुँगविद्या गावति लै वीना ।
राग सरस अति समैनुकूला, सहचरि संग प्रवीना ।।
चार घरी ही रह्यो दिवस अब, रहु जनि नींद अधीना ।
तुम बिन नैना होत विकल अति, जल बिनु जैसे मीना ।।
फूल सखी फूली फुलवारी, मनहरनी सु नवीना ।
कुंदप्रिया सुनि उठे युगलवर, सखियन जै रव कीना ।।

सखियों द्वारा श्रीराधा रानी की जै जैकार

पद :– 51

जै श्रीराधे नित्य विहारिणि सब सुख सारिणि स्वामिनी राधे ।
जै श्रीराधे दुःख निवारिणि मंगल कारिणि स्वामिनी राधे ।
जै श्रीराधे श्रीवन चारिणि रस विस्तारिणि स्वामिनी राधे ।
जै श्रीराधे सोभा धारिणि हरि हिय हारिणि स्वामिनी राधे ।

जै श्रीराधे हरि चित चोरी रस रँग बोरी स्वामिनी राधे।
जै श्रीराधे कुँवरि किशोरी स्यामा गोरी स्वामिनी राधे।
जै श्रीराधे चतुरा भोरी नित्य किसोरी स्वामिनी राधे।
जै श्रीराधे प्रीतम जोरी मन मृग डोरी स्वामिनी राधे।
जै श्रीराधे लाड़ लड़ीली स्याम हठीली स्वामिनी राधे।
जै श्रीराधे रंग रँगीली रसिक रसीली स्वामिनी राधे।
जै श्रीराधे छैल छबीली गुण गरबीली स्वामिनी राधे।
जै श्रीराधे द्युति चमकीली अति सरमीली स्वामिनी राधे।
जै श्रीराधे सखिन दुलारी अति सुकुमारी स्वामिनी राधे।
जै श्रीराधे स्यामा प्यारी रूप उजारी स्वामिनी राधे।
जै श्रीराधे भोरी भारी सब सों न्यारी स्वामिनी राधे।
जै श्रीराधे हौं बलिहारी कुंद पियारी स्वामिनी राधे।

श्रीप्रिया प्रियतम का उत्त्थापन भोग आरोगना
चौपाई, पद :– 52

शैया ते उठि दोऊ लालन। प्रथम कियो कर वदन प्रछालन॥
जोरी सुख करनी मनहरनी। पद धुलाय सुख जात न बरनी॥
रँगदेवी श्रृंगार सँवार्‍यो। कछुक नयो लै तन पै धार्‍यो॥
बैठाये दोउ सुमन सिँहासन। गंध चरचि करि धूप मुदित मन॥
सब रितु फल मेवा रुचिकारी। भरि पकवान कनक मणि थारी॥
परसि नेह युत दोउन आगे। आरोगन लागे अनुरागे॥
ललिता बातनि सुख उपजावै। आप हँसे अरु सबहिं हँसावै॥
तुष्ट पुष्ट भए जब रस रंजन। युगलप्रिया जु करावति अँचवन॥
कुंदप्रिया सौं लै वर बीरा। बन बिहार दोउ चले अधीरा॥

वन बिहार

पद :– 53

चली प्रिया देखन फुलवाई ।
दरस परस रस लेत परस्पर, नागरि नागर जोरि सुहाई ।।
देखि देखि रचना फुलवाई, चकित मुदित मन करत बड़ाई ।
संग सहेली सोहति नीकी, सबन युगल हित सौंज सजाई ।।
बिजना[१] चँवर मोरछल[२] झारी, सुन्दर दर्पण रतन जड़ाई ।
पीकदानि पनडबा सुगंधी, कुंदप्रिया कर छतर धराई ।।

फूलों की बाँकी झाँकी में श्रीप्रिया प्रियतम

पद :– 54

फूलन की बाँकी झाँकी में, फूलन को श्रृंगार धराके ।
फूलन के आसन बैठाये, फूले फूले लागें बाँके ।
फूलन सों सजि सब सहचारी, फूली फूल लता सों झाँके ।
लखि लखि कुंदप्रिया अति फूली, फूली फूलसखी गुन गाके ।

वन बिहार करते हुए संध्या कुंज पहुँचना

पद :– 55

प्रिया लाल वन करत बिहार ।
कौतुक केलि किलोल किये बहु, घड़ी बीति गई पल सम चार ।।
बन बिहार बहु भाँति परम सुख, बिलसन पिय प्यारी सुख सार ।
कुंदप्रिया संध्या कुँज दोऊ, चले परस्पर गलभुज डार ।।

१ हाथ का पंखा २ मोरपंखी

संध्या आरती

पदः – 56

संध्या आरति करि सुख पाऊँ । युगल रसिक मन मोद बढ़ाऊँ ।।
नख सिख सुन्दर सजे युगलवर, रस के भरे नागरि नागर ।
लखि लखि रूप हृदय पधराऊँ, संध्या आरति करि सुख पाऊँ ।।
कनक मणी श्री स्यामा प्यारी, नील मणी घनस्याम बिहारी ।
अद्‌भुत जोरी पै बलि जाऊँ, संध्या आरति करि सुख पाऊँ ।।
नैन रसीले अति कजरारे, मंद हँसन जादू सा डारे ।
निरखि युगल छबि भाग मनाऊँ, संध्या आरति करि सुख पाऊँ ।।
संध्या कुँज की संध्या बेला, संध्या आरति में रस रेला ।
कुंदप्रिया करि नृत्य रिझाऊँ, संध्या आरति करि सुख पाऊँ ।।

स्तुति एवं प्रार्थना

पद :– 57

श्रीराधा निज चरण कमल की सेवा सक्ति प्रदान करो ॥1॥
प्यारी करुणामयि करुणा करि पराभक्ति रस दान करो ॥2॥
हे सर्वेस्वरि हे रासेस्वरि हे कुंजेस्वरि कृपा करो ॥3॥
हे स्यामेस्वरि हे प्रणतेस्वरि हे दीनेस्वरि दया करो ॥4॥
हे गोरांगी हे सोभांगी हे प्रेमांगी कृपा करो ॥5॥
हे सरसांगी हे चन्द्रांगी हे कनकांगी दया करो ॥6॥
हे मंजूश्री हे सुषमाश्री हे सोभाश्री कृपा करो ॥7॥
हे पद्‌माक्षी हे मीनाक्षी हे खँजनाक्षी दया करो ॥8॥

हे रसफूली हे निजभूली हे सुखमूली कृपा करो ॥9॥
हे हरि कामिनि हे गजगामिनि हे अभिरामिनि दया करो ॥10॥
लाड़ लड़ीली रंग रँगीली सरस रसीली कृपा करो ॥11॥
छैल छबीली गुन गरबीली मन मटकीली दया करो ॥12॥
नित्य नवेली अति अलबेली लाड गहेली कृपा करो ॥13॥
स्याम सहेली रस की बेली गूढ़ पहेली दया करो ॥14॥
अति सुकुमारी रसिकनि प्यारी रस मतवारी कृपा करो ॥15॥
भोरी भारी सब सों न्यारी सखिन दुलारी दया करो ॥16॥
हरि चितचोरी प्रीतम जोरी रसरँग बोरी कृपा करो ॥17॥
कुँवरि किसोरी चतुरा भोरी स्यामा गोरी दया करो ॥18॥
नित्य बिहारिनि श्रीवन चारिनि सोभा धारिनि कृपा करो ॥19॥
जन सुख कारिनि दु:ख निवारिनि भव भय हारिनि दया करो ॥20॥
सदा सुहागिनि अति बड़भागिनि हरि अनुरागिनि कृपा करो ॥21॥
मूरति मोहनि सूरति सोहनि हरि मग जोहनि दया करो ॥22॥
हरि मन रंजनि हरि सुख संजनि विरह विभंजनि कृपा करो ॥23॥
कुञ्ज वासिनी मृदुल हासिनी रस बिलासिनी दया करो ॥24॥
सखिन स्वामिनी कृष्ण भामिनी कंत कामिनी कृपा करो ॥25॥
कृपावर्षिनी चित्ताकर्षिनी सदाहर्षिनी दया करो ॥26॥
हरि मनहरनी प्रिय वसकरनी कंचन वरनी कृपा करो ॥27॥
जन सुख दानी जन कल्यानी जन वरदानी दया करो ॥28॥
साराँग नैनी कोकिल बैनी सब सुख ऐनी कृपा करो ॥29॥
पिय रति नेमा रूपा प्रेमा करनी क्षेमा दया करो ॥30॥

चाल मराली काँति निराली नख चन्द्राली कृपा करो ॥31॥
चतुर नागरी कृपा सागरी प्रेम गागरी दया करो ॥32॥
मन रसभीना रति सुखलीना केलि प्रवीना कृपा करो ॥33॥
सुन्दरि स्यामा सहचरि भामा पूरण कामा दया करो ॥34॥
रस की सरिता पिय हिय भरिता सौरभ झरिता कृपा करो ॥35॥
अद्भुत रूपा रूप अनूपा रसिकनि भूपा दया करो ॥36॥
भक्ति स्वरूपा सक्ति स्वरूपा मुक्ति स्वरूपा कृपा करो ॥37॥
पिय गलमाला नैन विसाला सुन्दरि बाला दया करो ॥38॥
प्रणत वत्सला भक्त वत्सला दीन वत्सला कृपा करो ॥39॥
दिव्य विग्रहे कृपा विग्रहे दया विग्रहे दया करो ॥40॥
स्वामिनिराधे प्रीतिअगाधे सबसुखसाधे कृपा करो ॥41॥
कुंदप्रिया सखि युगलप्रिया सखि हरिप्रिया सखि दया करो ॥42॥

सखियों का नृत्य गान लीला द्वारा श्रीप्रिया प्रियतम को रिझाना

चौपाई, पद :– 58

प्रमदागन मिलि रास रचावैं। नृत्य गान सों युगल रिझावैं ।।
मुदित सरस बाजिंत्र बजावैं। होड़ा होड़ी द्रुत गति पावैं ।।
पिय प्यारी रस लीला गावैं। सब निज निज गुण प्रकट दिखावैं ।।
वेष धर्‌यौ मोहनि अरु मोहन। करि अनुकरन रिझावैं दोउ जन ।।
हाव भाव बहु भाँति दिखावैं। आप हँसे अरु युगल हँसावैं ।।
नैनन नैन जोरि बतरावैं। रसिक सिरोमनि अति सरसावैं ।।
नृत्य गानमयि सखियन लीला। निरखि निरखि मन होत रसीला ।।
कुंदप्रिया जै सब्द उचारे। दोउन को हिय लेत हुलारे ।।

श्रीप्रिया प्रियतम का रास करना

पद :– 59

मणि मण्डल निर्तत पिय प्यारी ।
सखी उमँग भरि साज बजावैं, सरस सुमधुर राग इकसारी ।।
होड़ा होड़ी नचत परसपर, नई नई गति लेत खिलारी ।
जोइ जोइ हरि नृत भेद दिखावैं, सोइ गुरुतर चतुरा सुकुमारी ।।
उरप तिरप भ्रू ग्रीवा मटकनि, कृस कटि मुरनि अंग हियहारी ।
मँडलाकार सहचरी ठाढ़ी, देत मुदित मन सब कर तारी ।।
लखि नर्तन पिय सरवस हारे, लगे बजावन बंसी प्यारी ।
कुंदप्रिया भई श्रमित लाड़िली, श्रमकन पौंछत रसिक बिहारी ।।

श्रीप्रिया प्रियतम का निकुंज रस विलास

पद :– 60

देखो रहसि सदन में बिहरत, दोऊ स्यामा स्याम सजनियाँ ।
उर सों उर अरु नयन नयन को, मिलन सुललित ललाम सजनियाँ ।
अँग अंगनि की उरझनि बिलसनि, कैसी मन अभिराम सजनियाँ ।
कुंदप्रिया मणि कुंज झरोखन, निरखति युग सुख धाम सजनियाँ ।

रास विलास के दर्शन कर सखी के हृदयोद्‌गार

पद :– 61

लाल प्रिया की या विलसनि पे, कोटि वितन[1] रति वारूँ प्यारी ।
कुंजबिहारी नागरि नागर, मनहर दीठ[2] उतारूँ प्यारी ।
रास विलास करैं निसि वासर, इहि विधि नित्य निहारूँ प्यारी ।
कुंदप्रिया अति भाँवति जोरी, मन मन्दिर बैठारूँ प्यारी ।

१ कामदेव   २ नजर

सिंहसनासीन युगल के मोहिनी रूप दर्शन
पद :– 62

मोहनि मोहन जोरी नीकी ।
रंग भरे बैठे सिंहासन, करि सखियन के हीकी ।।
अलक तिलक सहचरी सँवारति, अरु कज्जल की लीकी ।
नख सिख रतन सिँगार सजाई, झाँकी रसिकनि पीकी ।।
तीन लोक नहिं पटतर कोऊ, उपमा सबहीं फीकी ।
कुंदप्रिया युग रसिक मुकुटमनि, मूरी जीवन जीकी ।।

ब्यारूकुंज में ब्यारू (रात्रि भोज) के लिये श्रीप्रियाप्रियतम का विराजना
पद :– 63

बिलसत चार घरी निसि बीती, रँग रस भीने सब पुलकाई ।
जानि समय ब्यारू को अलिगण, दोउन ब्यारू कुञ्जहिं लाई ।
सरसीली अनुरागी जोरी, कञ्चन मणि चौकी पधराई ।
कुंदप्रिया अति मधुर सलूने, थार कनक व्यंजन लै आई ।

ब्यारू भोग आरोगना
पद :– 64

लाल प्रिया मिलि करत बियारी ।
व्यंजन सरस सुगन्धित परसति, अलि उर लाड़ चाव भरि भारी ।।
तिक्त कषाय अम्ल कटु लूने, और मधुर रस चारि प्रकारी ।
मनभाये पकवान कौर लै, देत परसपर करि मनुहारी ।।
प्यारी जू रूचि सौं जोइ जेंवत, सोई जेंवत रसिक बिहारी ।
केसर मेवा इला[१] सिता[२] युत, पय[३] पीवत प्रीतम कर प्यारी ।।

१ इलायची २ मिश्री ३ दूध

छबिरस बतरस प्रीति हास्यरस, सब रस पान करत पिय प्यारी ।
जानि तृप्त अति युगलप्रिया जू, जल अँचवावति कर लै झारी ।।
सुरभित पान दियो दोउन कर, लाल प्रिया की लखि पल भारी ।
कुंदप्रिया मणि दीप थार सजि, करत आरती सब सहचारी ।।

शयन आरती

पद :– 65

सैन आरती वारति अलियाँ । नाचति गावति सब मिल रलियाँ ।।
दोउ विराजैं रतन सिंहासन, अंग अंग सोहैं आभूषन ।
गल में दुलरी माला कलियाँ, सैन आरती वारति अलियाँ ।।
अरसाये नैना अति प्यारे, नींद भरे बिच झपकी मारे ।
मृदु बोलनि मनु मिसरी डलियाँ, सैन आरती वारति अलियाँ ।।
कंचन थार मणिन के दियरा, करति आरती वारति हियरा ।
सब सखि एकहिं साँचें ढलियाँ, सैन आरती वारति अलियाँ ।।
दोउन पै डारैं तृन तोरी, कुन्दप्रिया रस बोरी जोरी ।
भरि भरि वारैं पुष्पाँजलियाँ, सैन आरती वारति अलियाँ ।।

शयन कुंज चलने के लिये सखी का प्रार्थना करना

पद :– 66

सयन कुञ्ज चलिये सुकुमारी ।
दुग्ध फेन सम सेज सजी है, सुन्दर वसन बिछ्यौ रुचिकारी ।।
भाँति भाँति के मणि फूलन सों, सज्यौ कुञ्ज अद्भुत हियहारी ।
कुंदप्रिया श्रीयुगलप्रिया मिलि, सुमनसार[१] चरच्यो दिसि चारी ।।

१ इत्र

शयन सेवा
पद :– 67

पौढ़े सैया युगल किसोर ।
मणि चौकी पै कलस पनडबा, भूषण मंजूषा[१] इक ओर ।।
युगलप्रिया अरु हितू सहचरी, चरण पलोटति भाव विभोर ।
सोय जानि पग अचक अचक धरि, कनक सींक चिक खोलति डोर ।।
कुञ्ज झरोखन निरखति झाँकी, प्रमुदित सहचरि नैनन कोर ।
कुंदप्रिया प्रमदागन गावति, रस माधुरि लीला चित चोर ।।

शयन
पद :– 68

सोवत श्रमित मिथुन अनुरागे ।
भुज सिरहानो दिये परस्पर, पौढ़े रंग भरे उर लागे ।।
पुलकित अंग अंग हुलसित हिय, दोऊ सुरति रंग में पागे ।
कुंदप्रिया अँग उरझनि बाँकी, जानि परत नहिं सोय कि जागे ।।

शयन दर्शन कर सखियों के प्रेमोद्गार
पद :– 69

देख सजनियाँ पिय प्यारी जू, कैसे सोये औढ़ पिछौरी ।
मंद हँसन चित वित्त हरत लखि, पलक परै नहिं इक पल को री ।
नैन धरे को एक यही फल, निसि वासर निरखौं यह जोरी ।
कुंदप्रिया जीवन की मूरी, रसिकन प्राण किसोर किसोरी ।

१ पिटारी

ब्याहुला
दोहा, पद :– 70

इच्छा रूपा सहचरी, देरवन चहँ विवि व्याह ।
तबही जागे जुगलवर, बाढ्यौ अति उत्साह ।।
सखि मनवाँछा कल्पतरु, दोउ बिहारी लाल ।
कुंज ब्याहुला पहुँच गये, सखियन सँग तत्काल ।।
स्वेत बसन धारण किये, स्वेत मणिन सिंगार ।
अष्टकोण सुख सेज पै, कीनो रास बिहार ।।
पी प्यारी दोउ चन्द्रमा, सहचरि नैन चकोर ।
कुंदप्रिया जानति नहीं, कित रजनी कित भोर ।।

विवाह की रीत
चौपाई, पद :– 71

सखी ब्याहुला कुंज सजाई । यथा थली सब सौंज धराई ।।
सजि बैठे दोउ दुलहा दुलहन । मौरी मौर हरण सबकौ मन ।।
मण्डप सोभा कही न जाये । मनु मनसिज[1] निज करन सजाये ।।
प्रथम सखिन वेदी पुजवाई । रीत कीन पूरी मनभाई ।।
इँदुलेखा कीनी गठजोरी । भाँवरि लेत किसोर किसोरी ।।
नाचहिं गावहिं ताल बजावहिं । अलिगण मनहर भाव दिखावहिं ।।
सोइ करहिं जो युगलहि भावै । रस सागर उमड़्यो सो आवै ।।
सिंहासन राजहिं नव दम्पति । कुंदप्रिया बलि लखि सुख सम्पति ।।

१ कामदेव

रास विलास
पद :– 72

सुभग सेज पौढ़े पिय प्यारी ।
रंग भरे पुलकित हुलसित ह्वै, रास विलास करत रुचिकारी ।।
सदा सुहागिन रहो लाडली, गावहिं हिय हरषित सहचारी ।
ऐसेहि विलसो नित नव दम्पति, कुंदप्रिया यह सगुन विचारी ।।

स्तवगान कुंज में सिंहासन पर विराजमान श्री युगल रसिक
पद :– 73

सिंहासन बैठे सुखदाई ।
गौने के सुख विलसि बिहारी, सखियन आस पुजाई ।।
अनुरागिनि अलिगण सौभागिनि, युगल रसिक धन पाई ।
कुंदप्रिया लखि रूप माधुरी, पुलकि हरषि यस गाई ।।

सखियों द्वारा श्रीराधा रानी का नाम यश गान
पद :– 74

श्री राधा सर्वेस्वरि प्यारी, कृष्णप्रिया स्यामा गौरांगी ।
नागरि कुल चूड़ामणि रमणी, लाड़िलि अलक लड़ी मृदुलांगी ।
सुख सरिता पिय हिय रस भरिता, मन मोहन मोहनि सरसांगी ।
कुंदप्रिया प्राणन की स्वामिनि, वत्सलता मूरति प्रेमांगी ।

१ चन्द्रमा

सखियों द्वारा श्रीराधा रानी का यश गान

पद :– 75

करुणा प्रेम कृपा की मूरति, दीनदयालू कुँवरि किसोरी ।
प्रेमाभगती वरदा सुखदा, दुख हरणी रस रँग में बोरी ।
सुन्दरता सीमा सुख रूपा, माधव बदन मयंक[1] चकोरी ।
कुंदप्रिया अति अद्भुत रूपा, सबसों चतुरा सबसों भोरी ।

युगल यश गान

पद :– 76

अति अद्भुत जोरी पिय प्यारी ।
सुन्दर परम मधुर नित नूतन, कोटि काम रति दर्प विदारी ।।
सब लच्छन युत नव किसोर वय, अँग अँग सरस प्रेम संचारी ।
विहरति अनुदिन नवल निकुञ्जन, तन मन सुधि बुधि सकल बिसारी ।।
चलत परस्पर धरि भुज अंसन, चित्र[1] पथिक वर प्रेम पुजारी ।
दै अँकवार विराजहिं आसन, बतरावनि पै अलि बलिहारी ।।
रमणी रमण प्रेम रस माते, रस बरसावत अति सुखकारी ।
यह रस नयन चसक भरि पीवत, कुंदप्रिया मिलि सब सहचारी ।।

श्रीप्रिया प्रियतम द्वारा सखियों को मान दान

पद :– 77

प्रमदागन भई भाव विभोर ।
पायो बहु सुख मान दुहुन सौं, या सुख को कहुँ ओर न छोर ।।
निज निज अंगनि भूषण लै लै, दियो प्रसाद युगल चित चोर ।
कंकन माला हार कौंधनी, कर्णफूल मुदरी पिछ मोर ।।
रीझि प्रिया वर वीरी दीनी, युगलप्रियाहि रदन ते तोर ।
कुंदप्रिया सखियन सँग आये, रंग महल कहँ युगलकिसोर ।।

१ अद्भुत

राधा राधा

मोहन महल की मोहकता

पद :– 78

फूलन सजाई मणिलड़ियाँ लगाई कुँज प्रिया मनभाई छटा हिय बस गई ।
मोहन महल सखि टहल करन हित चहल पहल पिय हिय बस गई ।
देख चित्रकारी तन प्रेम सञ्चारी रँगे दोउ पिय प्यारी रति हिय बस गई ।
युगलबिहारी कुँदप्रिया बलिहारी सँग सखि सहचारी जोरी हिय बस गई ।

शयन सेवा

पद :– 79

पौढ़े सैया युगलबिहारी ।
कोमल सेज सजी मणि फूलन, चरचि सुगंध अनेक प्रकारी ।।
इत उत कञ्चन मणि चौकी पै, पीकदानि पनडबा रू झारी ।
कनक कटोरन दूध पिवायो, दोउन को करि करि मनुहारी ।।
नींद भरे नैना अरसाये, लेत जँभाई बारम्बारी ।
करि दुलार पौढ़ाये दोऊ, होले पग चाँपत सखि प्यारी ।।
जानि सुप्त सब बाहर आईं, रंध्र जाल निरखति सहचारी ।
कुंदप्रिया हिय धारि लाल दोउ, डोरि खोलि द्वारे चिक डारी ।।

युगल बिहार दर्शन कर सखियों का उल्लसित होना

पद :– 80

उमड़ी आज सरस रस सरिता, पीवति नैन कटोर सहेली ।
पी रस मगन भई प्रमदा गन, उर में उठति हिलोर सहेली ।
रस में पागी भूली तन सुधि, नाचति मिल चहुँ ओर सहेली ।
कुंदप्रिया सुख कहत न आवै, रसना नाहिं करोर सहेली ।
राधा राधा

अलबेले युगल बिहारी के अद्भुत रूप दर्शन

पद :– 81

पी प्यारी पूनम के चंदा, नैना दोउ चकोर पियारी।
श्रमकन भाल तिलक मिलि सोहें, मनु मणि केसर खोर पियारी।
लखि अति अद्भुत अंग निकाई, वारों काम करोर पियारी।
कुंदप्रिया अलबेले नागर, रस रत स्यामल गौर पियारी।

नींद सखी से वार्तालाप

पद :– 82

नींद सखी! बड़भाग तिहारे ।
कौतुक केलि किलोल रास तजि, तुम सों नेह कियो दोउ प्यारे ।।
सैन समै रसऐन नैन में, कियो वास अति सुख विस्तारे ।
पिय प्यारी पै वार अपुनपो, करि दुलार हरिये श्रम सारे ।।
सखियन के अति लाड़ लड़ीले, सेवा सुख तोहि देन पधारे ।
कुंदप्रिया करियो मनभायो, जो कछु लाड़ चाव चित धारे ।।

सखियों का सगुन मनाते हुए रंगदेवी जू की कुंज पहुँचना

पदः – 83

विलसौ निसि दिन दोऊ प्यारे ।
सदा सुहागिन नवल दुल्हिनियाँ, प्रियवर नैनन तारे ।।
निसि सुहाग रस पगो स्वामिनी, अँग अँग रस संचारे ।
जोरी बसो हिये नैनन में, यह सुख नित विस्तारे ।।
सगुन मनावति पहुँची अलिगण, सुखदा[१] कुँज के द्वारे ।
कुंदप्रिया रँगदेवी जू सँग, निर्तत सुधि न सँभारे ।।

१ रंगदेवी जी की कुंज का नाम

युगलप्रिया गान
दोहा, पदः – 84

नवरँग भीनी राधिका, नवरँग भीनो स्याम।
नवरँग भीनी सहचरी, नवरँग भीनो धाम ॥1॥
नित्य नवीना राधिका, नित्य नवीनो स्याम।
नित्य नवीना सहचरी, नित्य नवीनो धाम ॥2॥
कल्प लता श्रीराधिका, कल्प तरु घनस्याम।
सींचत मालिनि सहचरी, वांछित प्रद श्रीधाम ॥3॥
जन मनरंजन राधिका, जन मनरंजन स्याम।
जन मनरंजन सहचरी, जन मनरंजन धाम ॥4॥
चटक चाँदनी राधिका, चारु चंद घनस्याम।
रसिक चकोरी सहचरी, जगमगात श्री धाम ॥5॥
अति अलबेली राधिका, अति अलबेलो स्याम।
अति अलबेली सहचरी, अति अलबेलो धाम ॥6॥
कृपासिंधु श्रीराधिका, कृपासिंधु घनस्याम।
कृपासिंधु सब सहचरी, कृपासिंधु श्रीधाम ॥7॥
मंगलमयि श्रीराधिका, मंगलमय घनस्याम।
मंगलमयि सब सहचरी, मंगलमय श्रीधाम ॥8॥
प्रेम प्रदायिनि राधिका, प्रेम प्रदायक स्याम।
प्रेम प्रदायिनि सहचरी, प्रेम प्रदायक धाम ॥9॥
नव दुलहिन श्रीराधिका, नव दुलहा घनस्याम।
लाड़ लड़ावति सहचरी, रच्यौ ब्याहुला धाम ॥10॥

रस रूपा श्रीराधिका, रस स्वरूप घनस्याम।
रस रूपा सब सहचरी, रस स्वरूप श्रीधाम ॥11॥
चिंतामणि श्री राधिका, चिंतामणि घनस्याम।
चिंतामणि सब सहचरी, चिंतामणि श्री धाम ॥12॥
स्याम हिये श्री राधिका, राधा के हिय स्याम।
बसें युगल हिय सहचरी, राजहिं सब श्रीधाम ॥13॥
स्वजन सुखद श्रीराधिका, स्वजन सुखद घनस्याम।
स्वजन सुखद सब सहचरी, स्वजन सुखद श्रीधाम ॥14॥
प्रणतपालिका राधिका, प्रणतपाल घनस्याम।
प्रणतपालिका सहचरी, प्रणतपाल श्रीधाम ॥15॥
जयति जयति श्रीराधिका,जयति जयति घनस्याम।
जयति जयति सब सहचरी,जयति जयति श्रीधाम ॥16॥
नमो नमो श्रीराधिका, नमो नमो घनस्याम।
नमो नमो सब सहचरी, नमो नमो श्रीधाम ॥17॥
नाम रटूँ श्रीराधिका, नाम रटूँ घनस्याम।
सेवा करुँ सँग सहचरी, बसी रहूँ श्री धाम ॥18॥
हिये बसाऊँ राधिका, हिये बसाऊँ स्याम।
हिये बसाऊँ सहचरी, हिये बसाऊँ धाम ॥19॥
कृपा कीन्हि श्री राधिका, कृपा कीन्हि घनस्याम।
कृपा कीन्हि सब सहचरी, कुंद बसी श्री धाम ॥20॥

दोहा, पद

नाच गाय सुख पाय कै, सखी पहुँचि निज कुञ्ज।
युगल केलि निरखति सपन, रैन भई सुख पुञ्ज ॥1॥
इहि विधि पावौ सर्वदा, सकल सुखन को सार।
अष्टयाम निरखत रहो, प्रियतम नित्य विहार ॥2॥
या सुख को सोइ जानहि, जाहि युगल अपनाय।
रसिकन की किरपा बिना, भेद कहाँ ते पाय ॥3॥
इहि ते पर कछु सुख नहीं, रसिकन कह्यो विचार।
सर्वोपरि सखि भाव सों, होय पान सुख-सार ॥4॥
चिंतन गायन पठन अरु, श्रवण कियें सुख-सार।
सिद्ध सखी वपु पावहीं, निरखहिं नित्य विहार ॥5॥
संवत सत्तर द्वै सहस, ब्रह्म समै रविवार।
सुक्ल तीज भादों लिख्यो, करुण दास सुख-सार ॥6॥

इति श्री

सद्गुरु श्री करुण दास (श्री कृष्ण बिहारी शरण) जी महाराज
कृत अष्टयाम सुख सार सम्पूर्णम् ।